

1. वृथज्जत सन्धि - 20

1. हरिश्चोते = हरिस् + चोते
2. सत् सचरित्रम् = सत् + चरित्रम्
3. तद्य = तत् + च
4. रामश्चिन्तेति = रामस् + चिन्तेति
5. सव्ययन = सत् + ययन
6. रामषष्ठः = रामस् + षष्ठः
7. रामष्टीकते = रामस् + टीकते
8. तत् + टीका = तद्वटीका
9. उड्डयनम् = उत् + उयनम्
10. चक्रिण्य चक्रिण्योक्तसे = चक्रिन् + दौक्तसे
11. पन् + डितः = पण्डितः
12. वागीश = वाक् + ईश
13. अजन्त = अच् + अन्त
14. सुबन्त = सुप् + अन्त
15. चिदानन्द = चित् + आनन्द
16. षड्दर्शन = षट् + दर्शन
17. सह सत्कार = सह + काट
18. सम्पत्समग्र = सम्पद् + समग्र
19. विपत्काल = विपद् + काल
20. दिक्पाल = दिग् + पाल

2. संस्कृत श्लोकाः (20)

1. कश्चित् कस्मचिन्मित्रं, न कश्चित् कस्मचित् रिपुः।  
अर्थतस्तु निबध्यन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा॥  
अर्थः - न कोई किसी का मित्र है और न ही शत्रु।  
कारणवश ही लोग मित्र और शत्रु बनते हैं।
2. मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टास्त्रीप्ररोते च।  
दुःखदुःखितैः सम्प्रयोगेण पण्डितोऽप्यवसीदति।  
अर्थः - मूर्ख शिष्य को पढ़ाने पर, दुष्ट स्त्री के साथ जीवन बिताने पर तथा  
दुःखियों से गियों के बीच में रहने पर विद्वान् व्यक्ति भी दुःखी हो ही जाता है।



3. निषेवते प्रशस्तानी तिन्दितानी न सेवते ।

अनामिकः श्रद्धान् एतत् पण्डितलक्षणम् ॥

अर्थः - सुसद्गुण, शुभ कर्म, भगवान् के प्रति श्रद्धा और विश्वास, यज्ञ, दान, जनकाभ्याण आदि, ये सब स्वयं ज्ञानीजन के शुभ - लक्षण होते हैं।

4. क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च हीः स्तम्भो मान्यमानिता ।

यमर्थान् नापकर्षन्ति सर्वे स वै पण्डित उच्यते ॥

अर्थः - जो व्यक्ति क्रोध, अहंकार, दुष्कर्म, अति - उत्साह, स्वार्थ, उद्वेगता इत्यादि दुर्गुणों की ओर आकर्षित नहीं होते, वे ही सच्चे ज्ञानी हैं।

5. यस्य कृत्यं न विच्यन्ति शीतमुष्णं ग्रामं रितः ।

समृद्धिसमृद्धिर्वा सर्वे पण्डित उच्यते ॥

→ जो व्यक्ति सरदी - गरमी, अमीरी - गरीबी प्रेम - धृणा इत्यादि विषय परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता और तत्स्थ भाव से अपना राजधर्म निभाता है, वही सच्चा ज्ञानी है।

6. उद्यमेनैव हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः ।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति भृगाः ॥

→ प्रयत्न करने से ही कार्य पूर्ण होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं, सोते हुए शेर के मुख में भृग स्वयं प्रवेश नहीं करते हैं।

7. विद्वत्त्वं य नृपत्वं य न एव तुल्ये कदाचन ।

श्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥

→ विद्वता और राज्य अतुलनीय हैं, राजा को तो अपने राज्य में ही सम्मान मिलता है पर विद्वान का सर्वत्र सम्मान होता है।

8. पृथिव्यां त्रीणि शक्तानि जलमग्नं सुभाषितम् ।

मूर्ध्नि पाषाणखण्डेषु स्तम्भजा प्रदीयते ॥

→ पृथ्वी पर तीन ही शक्त हैं जल अग्नि और अच्छे वचन। फिर भी मूर्ख पत्थर के टुकड़ों को शक्त कहते हैं।



9. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियं।  
 प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥  
 → सत्य बोलें, प्रिय बोलें पर अप्रिय सत्य न बोलें  
 और प्रिय असत्य न बोलें, इसी सनातन शीति है॥

10. मूर्खस्य पञ्च चिन्तानि गर्वो दुर्वचनं तथा।  
 क्रोधश्च दुष्टवादश्च परनाम्नेष्वनादरः॥  
 → मूर्खों के पाँच लक्षण हैं - गर्व, अपराध, क्रोध,  
 हठ और दुष्ट इसी बातों का अनादर॥

11. वाणी रसवती यस्म, यस्म श्रमवती क्रिया।  
 लक्ष्मीः दानवती यस्म, सफलं तस्म जीवितं॥  
 → जिस मनुष्य की वाणी मीठी है जिसका  
 कार्य परिश्रम से युक्त है, जिसका धन दान  
 करने से प्रयुक्त होता है, उसका जीवन  
 सफल है।

12. प्रदोषे दीपकः चन्द्रः, प्रभाते दीपकः रविः।  
 त्रैलोक्ये दीपकः धर्मः, सुपुत्रः कुलदीपकः॥  
 → संध्या - चन्द्र काल में चंद्रमा दीपक है, प्रातः  
 काल में सूर्य दीपक है, तीनों लोकों में धर्म  
 दीपक है और सुपुत्र कुल का दीपक है।

13. प्रियवाक्यं प्रदानेन सर्वं पुष्पमिति जन्तवः।  
 तस्मात् तदैव वक्तव्यमवचने का दक्षिणता॥  
 → प्रिय वाक्य बोलने से सभी जीव संतुष्ट  
 हो जाते हैं, अतः प्रिय वचन ही बोलने  
 चाहिए। ऐसे वचन बोलने में कंजूसी कैसी॥

14. देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चनः।  
 गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न शंशयः॥  
 → भाग्य स्वरुप जाए तो गुरु का रक्षा करता है, गुरु  
 स्वरुप जाए तो कोई नहीं होता।  
 गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है,  
 गुरु ही रक्षक है, इसमें कोई संदेह नहीं



18. अग्निवातनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।  
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं॥  
→ बड़ों का अग्निवातन करने वाले मनुष्य की और  
नित्य वृद्धों की सेवा करने वाले मनुष्य की  
आयु, विद्या, यश और बल - ये चार  
चीजें बढ़ती हैं।

16. हस्तस्य श्रूषणम् दानम्, सत्यं कंठस्य श्रूषणम्।  
श्रोतस्य श्रूषणं शास्त्रम्, श्रूषतेः किं प्रयोजनम्॥  
→ हाथ का आश्रूषण दान है, गले का आश्रूषण  
सत्य है, कान की शोभा शास्त्र सुनने से है,  
अन्य आश्रूषणों की क्या आवश्यकता है।

14. यस्मै नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किं।  
लोचनश्यामं विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यते॥  
→ जिस मनुष्य के पास स्वयं का विवेक नहीं है, शास्त्र  
उसका क्या करेंगे। जैसे नेत्रविहीन व्यक्ति के लिए  
दर्पण व्यर्थ है।

18. न कश्चित् कस्याचित् मित्रं न कश्चित् कस्मचित् शत्रुः।  
व्यवहारेण जायन्ते, मित्राणि नृदि शत्रुस्तथा॥  
→ न कोई किसी का मित्र होता है, न कोई किसी  
का शत्रु। व्यवहार से ही मित्र या शत्रु बनते  
हैं।

19. दुर्जनः स्वस्वभावेन परकार्ये विनश्यति।  
नोदरं तृप्तिगामातीं गृध्रकः वस्त्रभक्षकः॥  
→ दुष्ट व्यक्ति का स्वभाव ही दूसरे के  
कार्य बिगड़ने का होता है। बसों को काटने वाला घृह  
पैठ भरने के लिए कपड़े नहीं काटता।

20. श्रमोः गरीयसी माता, स्वर्गात् उत्तमतः पिता।  
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात् अपि गरीयसी॥  
→ श्रम से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊंचे पिता है,  
माता और मातृश्रम स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।



3. वाक्याः

1. गौपालः ग्रामम् गच्छति।  
→ मोपाल गाँव जाता है।
2. आशा पत्रं लिखति।  
→ आशा पत्र लिखति है।
3. राजेश पादुकन्दुकेन क्रीडति।  
→ राजेश फुटबॉल से खेलता है।
4. बालक स्वपाठम् पठति।  
→ बालक अपना पाठ पढ़ता है।
5. रामः शवणम् बाधेन हन्ति।  
→ राम ने शवण को बाध से मारा।
6. दिनेशः अश्वात् पतति।  
→ दिनेश घोड़े से झिन्न गिरता है।
7. आशा अजमेरम् आगच्छति।  
→ आशा अजमेर से आति है।
8. गुरुशिष्येषु स्निह्यति।  
→ गुरु शिष्यों से प्रेम करता है।
9. अहम् किरणं पश्यामि।  
→ मैं किरण को देखता हूँ।
10. अहम् विदेशम् आगच्छाम्।  
→ मैं विदेश से आता हूँ।
11. वृक्षे खगाः तिष्ठन्ति।  
→ वृक्ष पर पक्षी बसे हुए हैं।
12. आकाशात् वर्षा भवति।  
आकाश से वर्षा होती है।
13. कक्षाध्यायं छात्रो पठति।  
कक्षा में छात्र पढ़ते हैं।
14. उद्याने वृक्षानि विकसन्ति।  
→ बगीचे में वृक्ष बढ़ रहे हैं।
15. अहम् सर्वदा सत्यम् वदु।  
→ सदा सत्य बोलो।
16. अहं वृद्धानाम् सेवे।  
→ मैं वृद्धों की सेवा करता हूँ।
17. सुनीत जलम् आनयति।  
→ सुनीत जल लाति है।
18. गंगा हिमालयात् निर्गच्छति।  
→ गंगा हिमालय से निकलति है।
19. तस्य मित्रं अत्र आगच्छति।  
→ उसका मित्र यहाँ आता है।
20. अहं गीतम् गायति।  
→ मैं गाना गाता हूँ।
21. अश्वः तीव्रम् धावति।  
→ घोड़ा तेज दौड़ता है।
22. वने वृक्षाः सन्ति।  
→ जंगल में पेड़ हैं।
23. जनाः गृहेषु निवसन्ति।  
→ मनुष्य घरों में रहते हैं।
24. जयपुरे राजमन्दिरम् अस्ति।  
→ जयपुर में राजमन्दिर है।
25. अहम् कौवटम् विवसामि।  
→ आप कहाँ रहते हो।
26. भवान् कुत्र वसति।  
→ आप कहाँ रहते हो।



5. पत्र-लेखन

1. श्रीमन्तः प्रधानाध्यापक महोदयः,  
के.वी. आई. आई. टी,  
चेन्नई

आदरणीयः महोदयः,

सेवाश्रम निवेदनम् अस्ति यत् अहं ज्वरेण ग्रस्तः अस्मि। अतः  
अहं पाठशालायां आगन्तुं न शक्नोमि। तदर्थम् अस्मि आगामिनः दिने  
दिनद्वयस्य अवकाशः प्रदीयताम् इति प्रार्थयामे।

भवताम् आज्ञाकारी

शिष्यः सिद्धिद सोनी

\* कथा : 10A

2. श्रीमन्तः प्रधानाध्यापक महोदयः,  
के.वी. आई. आई. टी,  
चेन्नई,

आदरणीयः महोदयः

सर्विनमं निवेदनम् अस्ति यत् मम अग्रजस्य विवाहे मम शासनम् आवश्यकम्  
अस्ति। अतः विद्यालयम् अगन्तुं न पर्यामि। नृपया एक दिनस्य अवकाशं  
दत्वा अनुगृहीतं कुर्वन्तु भवन्तः।

भवताम् प्रियः शिष्यः,

सिद्धिद

3. ए6बी युजनविहार,  
नन्दपुरी जमपुर

28.8.2020

प्रिय मित्र कार्तिक,

सप्रेम नमोनमः।

अद्यैव भया शुभा सूचना प्राप्ता यत् भवान् परीक्षायाम् न केवलम्  
उत्तीर्णः जातः, अपितु प्रथमे स्थाने लब्धवान्। अस्मिन् प्रसन्नतायाः अवसरे  
निजपक्षतः, मम मातृ-पितृ पक्षतः अपि कोटिशः वर्धापनानि स्वीकरोतु भवान्।  
शीघ्रं मेलनं प्रतीक्षे  
भवदीयः मित्रम्  
सिद्धिद

५. सेवाभ्याम्

प्राचार्य महोदयाः

क. नि. ई, आई. टी

१ चेन्नई,

महोदयाः,

सादरं विबोधते यद् अहम् सप्तमां प्रेक्षां पठामि । ह्यः विद्यालयस्य  
वार्षिकोत्सवः आसीत् । ~~ज्वरे~~ ज्वरेण व्यापितः अहं प्रार्थनापत्रं न  
प्राश्चितवान् । अतः अहं रुष्यक्वयेन दण्डितः ।

श्रीमन्तः अहं विवशः आसम् । अतोऽहं प्रार्थये यत् त्वम् अर्घदण्डः क्षन्तव्यः ।

धन्यवादः ।